

**पुष्पवेणी स्त्री.** (तत्.) फूलों की माला।

**पुष्पशय्या स्त्री.** (तत्.) वह शय्या/बिछौना/बिस्तर/सेज जिस पर फूल बिछे हों, फूलों/पुष्पों की सेज।

**पुष्पशर/पुष्पशरासन पुं.** (तत्.) कामदेव, मन्मथ, मदन।

**पुष्पशाक पुं.** (तत्.) सब्जी के रूप में खाए जाने वाले फूल जैसे- फूलगोभी, सेमल इत्यादि।

**पुष्पशून्य वि.** (तत्.) वे पौधे जिनमें फूल नहीं पाए जाते।

**पुष्पशेखर पुं.** (तत्.) फूलों की माला, फूलों का हार।

**पुष्पसंवर्धन पुं.** (तत्.) वन. वनस्पतिविज्ञान की वह शाखा जिसमें फूल उगाने संबंधी अध्ययन किया जाता है।

**पुष्पसायक पुं.** (तत्.) कामदेव, मदन, मन्मथ।

**पुष्पसार पुं.** (तत्.) 1. मधु, शहद 2. मकरंद 3. इत्र।

**पुष्पहीन वि.** (तत्.) फूलों से रहित पौधा, वे पौधे जिनमें फूल न आते हों पुं. गूलर का पेड़।

**पुष्पांजलि स्त्री.** (तत्.) देवी-देवताओं को अर्पित करने हेतु अंजली में रखे हुए फूल।

**पुष्पांतक पुं.** (तत्.) दे. पुष्प भीति।

**पुष्पा स्त्री.** (तत्.) प्राचीन चंपा नगरी।

**पुष्पाकर/पुष्पागम पुं.** (तत्.) वसंत ऋतु।

**पुष्पाग्र पुं.** (तत्.) फल का बीजकोष।

**पुष्पाजीवी पुं.** (तत्.) माली।

**पुष्पापीड पुं.** (तत्.) फूलों का मुकुट, फूलों का सेहरा, सिर पर पहने जाने वाली फूलों की माला।

**पुष्पायुध पुं.** (तत्.) कामदेव, मन्मथ, मदन।

**पुष्पाराम पुं.** (तत्.) पुष्पवाटिका, फुलवारी, बगीचा।

**पुष्पावचयी पुं.** (तत्.) माली।

**पुष्पासव पुं.** (तत्.) 1. शहद, मधु 2. फूलों से बनी शराब।

**पुष्पास्त्र पुं.** (तत्.) कामदेव, मदन, मन्मथ।

**पुष्पिका स्त्री.** (तत्.) किसी ग्रंथ या पुस्तक में विशेषतः प्राचीन पांडुलिपियों/ग्रंथों में लेखक, प्रतिलिपिकार, रचना तिथि संबंधी जानकारी देने वाला अंश जो विशेषतः पुस्तक के प्रारंभ और अंत में होता था एवं इस अंश/हिस्से को प्रायः पुष्पों, लताओं आदि के चित्रों से सजा दिया जाता था।

**पुष्पित वि.** (तत्.) 1. जिसमें फूल लगे हों, फूलों से भरा हुआ 2. खिला हुआ, विकसित 3. अलंकृत भाषण, लेख आदि 4. समृद्ध।

**पुष्पिता स्त्री.** (तत्.) रजस्वला स्त्री।

**पुष्पिताग्रा स्त्री.** (तत्.) एक अर्धसमर्णिक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरण में 12 वर्ण होते हैं तथा वे क्रमशः 2 नगण, रगण और यगण के योग से बनते हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13 वर्ण होते हैं जो तगण, 2 जगण, रगण एवं गुरु के योग से बनते हैं।

**पुष्पेक्षु पुं.** (तत्.) कामदेव, मन्मथ, मदन।

**पुष्पोद्गम पुं.** (तत्.) वृक्ष आदि पर फूल लगना प्रारंभ होना।

**पुष्पोद्यान पुं.** (तत्.) पुष्पवाटिका, बगीचा, फुलवारी।

**पुष्पोन्माद पुं.** (तत्.) मनो. एक प्रकार का उन्माद जिसमें फूलों की तीव्र उत्कंठा/इच्छा होती है।

**पुष्पोपजीवी पुं.** (तत्.) माली।

**पुष्य पुं.** (तत्.) 1. पूस का महीना, पोष मास 2. उक्त नाम का एक नक्षत्र जो अश्विनी आदि नक्षत्रों में आठवाँ होता है।

**पुष्यार्क पुं.** (तत्.) ज्यो. 1. सूर्य के पुष्य नक्षत्र में होने पर बनने वाला योग 2. चंद्रमा का रविवार के दिन पुष्यनक्षत्र में होने का योग।

**पुसाना अ.क्रि.** (देश.) 1. पोषित होना, पोसा जाना 2. किसी कार्य का बन पड़ना संभव प्रतीत होना।